मुझ में बने रहो

शिष्य की पहचान–भाग 1

डॉ. डेविड प्लॉट

मैं आपके साथ मत्ती अध्याय 11 पढ़ना चाहता हूं। अतः यदि आपके पास बाइबल हों तो मेरे साथ पढ़ें। हमारा यह अध्ययन भी क्रमवार है। "मुझ में बने रहो"– हम देखेंगे कि इसका अर्थ क्या है– मसीह में बने रहना, मसीह की संगति में रहना, मसीह का शिष्य होना, मसीह का अनुयायी होना।

हमारे इस अध्ययन का लक्ष्य मात्र मसीह में बने रहना या उसका अनुसरण करना ही नहीं है वरन् अन्यों को उसके अनुसरण के लिए तैयार करना है। हमारा उद्देश्य यह नहीं है कि मत्ती रचित सुसमाचार के अध्याय 11 से कुछ तथ्य सीख कर प्रफुल्लित हों परन्तु यह कि इस अध्ययन श्रृंखला के समापन पर अन्यों को मसीह में लाने योग्य हो जाएं।

अतः हम वचन को ग्रहण करनेवाले ही नहीं, उसे दूसरो तक पहुॅचाने वाले हों अर्थात वचन हम तक आकर रुक न जाए वरन् वचन हमारे द्वारा प्रसारित हो अर्थात हमारी यह शिक्षाएं हमारे द्वारा अन्यों तक पहुंचें।

हम मत्ती 11:28–30 पर ध्यान देंगे परन्तु इसे समझने के लिए हमें पद 25 देखना अति आवश्यक है।

11:25 "उसी समय यीशु ने कहा, हे पिता, स्वर्ग और पृथ्वी के प्रभु, मैं तेरा धन्यवाद करता हूं, कि तू ने इन बातों को ज्ञानियों और समझदारों से छिपा रखा, और बालकों पर प्रगट किया है।"

हे पिता परमेश्वर, हम प्रार्थना करते हैं कि तू हमारे मन और आंखें अपने वचन के महान एवं सुखदायी सत्यों के प्रति खोल दे। हम प्रार्थना करते हैं कि ये वचन हमारे मन में प्रवेश कर जाएं और मसीह के अनुयायी होने के हमारे दृष्टिकोण में गंभीर परिवर्तन ले आएं। यीशु के नाम में, आमीन!

कि ठीक वैसा ही हमें मसीही विश्वास का अति स्पष्ट, सामर्थी, आग्रही और अति सुन्दर दृश्य प्रदान करते हैं, जैसा मसीह ने इसे रूप दिया है। यही नहीं, ये पद आज के मसीही आचरण को भी प्रभावी झिड़की देते हैं।

मैं यहां जीवन परिवर्तन करनेवाले दो उभरते हुए सत्यों को आपके सामने रखना चाहता हूं क्योंकि ये पद मसीही विश्वास का सारांश हैं। ये ऐसे सत्य हैं जो मसीही विश्वास को विश्व के अन्य धर्मों से अलग ही दर्शाते हैं। हम आज कलीसिया में इन जीवन परिवर्तन करनेवाले सत्यों से चूक गए हैं।

पहला सत्यः हम वह सब यीशु दे देते हैं जो हमारे पास है। इस अंश में जूए की उपमा दी गई है। जूआ लकड़ी का बना होता है जो बैल की गर्दन पर रखा जाता है कि वह बैलगाड़ी या हल को खींचे। जूआ या तो एक बैल के लिए बनाया जाता है या दो बैलों के लिए। जूए में दो बैलों को लगाने का उद्देश्य यह होता है कि खींचने की क्षमता बढ़े या एक बैल दुर्बल हो तो दूसरा बैल बलवन्त हो या एक बैल अप्रशिक्षत हो तो दूसरे के अनुभव द्वारा कार्य सुचारु रूप से हो जाए।

यह तो जूए का विवरण था परन्तु यीशु प्रथम शताब्दी के यहूदियों को संबोधित कर रहा था जो कठोर धार्मिक प्रथाओं के पालन में जी रहे थे। वे व्यवस्था के शिक्षकों और फरीसियों के निर्देशों के अधीन थे जो अनिवार्यताओं को पत्थर की लकीर बना रहे थे। उन्होंने व्यवस्था में 600 से अधिक नियम और जोड़ दिए थे। नियमों के पालन की अनिवार्यता के कारण उस युग के यहूदी टूट चुके थे।

अब मेरे साथ मत्ती 23: पद 1–4 पढ़ें जिसमें यीशु व्यवस्था के शिक्षकों और फरीसियों को खरी–खोटी सुना रहा है।

23:1–4 "तब यीशु ने भीड़ से और अपने चेलों से कहा, "शास्त्री और फरीसी मूसा की गद्दी पर बैठे हैं; इसलिये वे तुमसे जो कुछ कहें वह करना और मानना, परन्तु उनके से काम मत करना; क्योंकि वे कहते तो हैं पर करते नहीं। वे एक ऐसे भारी बोझ को जिनको उठाना कठिन है, बाँधकर उन्हें मनुष्यों के कन्धों पर रखते हैं; परन्तु स्वयं उसे अपनी उंगली से भी सरकाना नहीं चाहते।"

प्रथाओं के बोझ से दबे इन लोगों से यीशु ने कहा, "बोझ से दबे और थके–मांदे, मेरे पास आओ, मैं तुम्हें विश्राम दूंगा।" वह कहता है "मेरा जूआ अपने ऊपर उठा लो... और तुम मन में विश्राम पाओगे। क्योंकि मेरा जूआ सहज और मेरा बोझ हलका है इसका अर्थ क्या है?

इसका पहला अर्थ तो यह है कि हम अपने पाप उस पर डाल दें। उन पर व्यवस्था पालन की अनिवार्यता का बोझ इतना अधिक था कि वे उसे पूरा नहीं कर पा रहे थे और परिणामस्वरूप उनमें दोषी विवके उत्पन्न हो गया था। आज इस अध्याय को पढ़ कर मैं डरता हूं क्योंकि कलीसिया ठीक वही काम कर रही है जो ये शास्त्री और फरीसी कर रहे थे।

विभिन्न संस्कृतियों में सुसमाचार फैलाने के अध्ययन में हमने पाप, अपराध बोध, लज्जा और भय के परिणाम को देखा था। उस अध्ययन के बाद मैं ने अनेकों से पूछा कि वे अपराध बोध और लज्जा के विषय क्या सोचते हैं? उन्होंने कहा "कलीसिया।" उन्होंने कहा कि आराधना में जाने पर हमें अपराध का बोध होता है, इसलिए हम आराधना में जाना नहीं चाहते हैं। हम ठीक वही कर रहे हैं जो पहली शताब्दी के शास्त्री और

फरीसी कर रहे थे। हमने अनिवार्यताओं की ऐसी लम्बी सूची आराधकों को थमा दी है कि वे अपने आपको अक्षम एवं दोषी मानने लगे हैं, पापी समझने लगे हैं।

मेरे मित्रों, आपको दोषी बनने की आवश्यकता नहीं है। यदि आप प्रभु यीशु पर विश्वास करते हैं तो अपने पाप उस पर डाल दें। सत्य तो यह है कि आपके पापों का बोझ वह उठा चुका है और सदा काल के लिए आपके पापों को क्रूस पर ठोंक चुका है। भजन का रचनेवाला लिखता है–103:12, "उदयाचल अस्ताचल से जितनी दूर है, उसने हमारे अपराधों को हमसे उतनी ही दूर कर दिया है।" यशायाह 43:25 में परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की है, "मैं वही हूं जो अपने नाम के निमित्त तेरे अपराधों को मिटा देता हूं और तेरे पापों को स्मरण न करूंगा।" यीशु का जूआ उठाने का अर्थ यही है कि अपने पापों का बोझ उस पर डाल दें और यही

मसीही विश्वास का लक्ष्य है। परन्तु ध्यान दें कि मसीही विश्वास यहीं अन्त नहीं होता है जबकि हम सब का यही सोचना है कि हमने अपने पाप यीशु पर डाल दिए, बस हो गया! नहीं, मसीही जीवन की समस्या यही है कि अब से आगे हमारा जीवन कैसा हो उस पर हम ध्यान नहीं देते हैं। सत्य तो यह है कि यीशु पर अपने बोझ डालने के बाद मसीही जीवन का आरंभ होता है।

दूसरा सत्यः हम आज्ञापालन की अपनी संपूर्ण अयोग्यता उस पर डाल देते हैं। यहां एक बात पर ध्यान दें। यीशु व्यवस्था पालन के बोझ को संबोधित तो कर रहा है परन्तु वह व्यवस्था को हानिकारक नहीं कह रहा है। यीशु तो स्वयं व्यवस्था में विश्वास एवं आस्था रखता था। उसने तो यहां तक कहा कि वह व्यवस्था को तोड़ने नहीं, पूरा करने आया है।

दूसरी ओर, यीशु के कथन का अनुचित अर्थ न निकालें कि व्यवस्था को त्याग कर उसके पास आ जाएं जिससे कि एक निरंकुश जीवन जीएं। यीशु के कहने का अर्थ यह था कि उसके बिना परमेश्वर का आज्ञा–पालन और परमेश्वर को प्रसन्न करना संभव नहीं है। आज हम विश्वासियों की विडम्बना यह है कि हम सोचते हैं कि अपने प्रयासों से परमेश्वर को प्रसन्न कर सकते हैं। यह एक अति संकटकालीन स्थिति है क्योंकि ऐसी मानसिकता हमें मसीही विश्वास के लक्ष्य से पथभ्रष्ट कर देती है।

हम विश्वासी जन बाइबल पढ़ते हैं, प्रार्थना करते हैं, सुसमाचार प्रचार करते हैं, सिगरेट नहीं पीते, सिनेमा नहीं देखते, बुरी बातें मुंह से नहीं निकालते और अन्य सब सांसारिक कामों से दूर रहते हैं क्योंकि हमारी समझ में मसीही जीवन यही है कि उचित काम करें या अनुचित काम न करें। परन्तु यह सच है कि आप अपने कर्मों से परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते हैं।

वैयक्तिक कर्मों द्वारा अनुग्रह उपार्जन, क्षमा प्राप्ति तथा परमेश्वर को प्रसन्न करना कर्मकांड कहलाता है– मुझे प्रार्थना करना है, मुझे बाइबल पढ़ना है, मुझे घर में यह काम करना है, कार्यालय में मुझे यह काम

करना है और इस प्रकार हम मसीही विश्वास की अपनी समझ के अनुसार सब उचित काम करते हैं अन्यथा, हम सोचते हैं, परमेश्वर हमसे अप्रसन्न हो जाएगा। यह सब करते करते हम थक जाते हैं, मत्ती 11:28–30 में यीशु की बातों का सार यही है। वह कर्मकांड को पाप स्वरूप दर्शा रहा है और मेरे विचार में यह इक्कीसवीं शताब्दी का भी शाप है।

कर्मकाण्ड धर्म, नहीं नास्तिकवाद है, मैं आपको दो उदाहरण देना चाहता हूं। पहला, आपने घड़ी में अलार्म लगाया। सुबह सुबह अलार्म बजा और आप तुरन्त उठ गए। आपने बाइबल पढ़ी, मनन किया और प्रार्थना की। आपका दिन अच्छा आरंभ हुआ। आप काम पर निकल गए और आपका हर काम सही एवं अच्छा हुआ। आपके जीवन में मसीह की उपस्थिति वास्तविकता बनी। आप पूरा दिन मसीह की संगति में रहे और शाम को घर लौट आए। आपने किसी के साथ सुसमाचार भी बांटा। अब दूसरा उदाहरण, आपका अलार्म बजा और आप उसे बन्द करके सो गए। आपको बाइबल पढ़ने और प्रार्थना करने का समय नहीं मिला। आप जल्दी–जल्दी तैयार होकर काम पर निकल गए। आपका कोई भी काम ठीक से नहीं हुआ। आपको ऐसा लगा कि परमेश्वर आपके साथ नहीं है। आप दिन भर के काम से थक कर घर लौट आए। आपको भी किसी के साथ सुसमाचार बांटने का अवसर प्राप्त हुआ। अब मैं आपसे एक प्रश्न पूछता हूं, "इन दोनों उदाहरणों में किसी को मसीह में लाने का प्रतिफल कौन पाएगा?" आप सब यही कहेंगे कि पहले व्यक्ति को। क्यों? क्योंकि हम आशीषों को अपने कर्मों पर आधारित मानते हैं। परन्तु ध्यान रखें कि परमेश्वर की आशीषें उसके अनुग्रह से प्राप्त होती हैं न कि कर्मों से।

किसी प्यूरीटन (विशुद्धिवादी) प्रचारक ने कभी कहा; "हमारे पश्चाताप के आंसुओं को भी मसीह के लहू से धोना आवश्यक है।" यीशु के कहने का अर्थ यह था कि नियमों के पालन से मनुष्य थक जाता है और उसका चूक जाना स्वभाविक है। आएन थॉमस के शब्दों ने मुझे बेध दिया है, "मैं सन्डे स्कूल शिक्षकों, मंच पर प्रचारकों, क्षेत्र में कार्यारत मिशनरी और अनेक साधारण, निष्ठावान विश्वासियों के बारे में कह रहा हूं। वे बड़े अच्छे लोग हैं। आपको उनसे भेंट करके बड़ा अच्छा लगेगा। वे उद्धार की भाषा बोलते हैं वरन् उन शब्दों को दिल से कहते हैं। वे ढोंगी नहीं हैं, परन्तु वे थक चुके हैं– अनेक तो बहुत ही अधिक थक चुके हैं। उन्होंने अपने बिस्तर के पास घुटने टेक कर आंसुओं से परमेश्वर को पुकारा है, "परमेश्वर तू जानता है कि मैं कैसा निष्फल हूं, कैसा खोखला हूं, कैसा अयोग्य हूं..." और उनके पास इसका उत्तर नहीं है। आगे वह कहते हैं, "यह मसीही विश्वासियों का शाप है। इसी कारण इस पृथ्वी पर मसीह की कलीसिया के काम ठप पड़े हैं। परमेश्वर के वचन, उसके मन, उसकी इच्छा, उसके दण्ड को चुनौती देते हुए हर स्थान पर स्त्री–पुरुष परमेश्वर को वही समर्पित करना चाहते हैं जिसे परमेश्वर तुच्छ जानता है– देहिक कार्य! देह को पवित्र बनाने के प्रयास से अधिक घृणित एवं दयनीय अन्य कुछ नहीं।"

भाइयों एवं बहनों, मसीह विश्वास का मुख्य विषय यही है हमने परमेश्वर के आज्ञापालन की हमारी अयोग्यता को मसीह के हाथ में रख दिया है। अतः मन से निकाल दें कि आप उसे प्रसन्न करने के लिए कुछ कर सकते हैं। संघर्ष करना त्याग दें क्योंकि मसीह संघर्ष में जयवन्त हो चुका है। यीशु ने व्यवस्था को पूरा कर दिया है। औचित्य के प्रयास में न रहें क्योंकि मसीह आपके औचित्य को पूरा कर चुका है। परमेश्वर ने हमारी अयोग्यताओं को मसीह के क्रूस पर ठोंक दिया है। वह आपसे निराश नहीं है। वह आपको देखकर प्रसन्न होता है, क्यों? आपकी योग्यता के लिए नहीं परन्तु इसलिए कि उसके पुत्र ने आपके लिए अपना लहू बहाया। यही कारण है कि मसीह यीशु थके मांदों को बुलाता है। आप उसे अपना सब कुछ दे दें।

इसका अर्थ है, यीशु हमें अपना सब कुछ दे देता है। सुनिए वह क्या कहता है, "मेरा जूआ अपने ऊपर उठा लो, और मुझसे सीखो; क्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूं।" यह एक ऐसा पद है जो मुझे उलझन में डाल देता है क्योंकि एक ओर तो यीशु मुझे मुक्ति देता है और दूसरी ओर वह कह रहा है कि संसार के जूए में जुत जाओ। क्यों? यीशु के कहने का वास्तविक अर्थ वही है जो हमने अभी कुछ समय पहले ही देखा कि बलवन्त बैल दुर्बल बैल का बोझ अपने ऊपर ले लेता है। आपके पास जूए में ऐसा साथी है जिसका बल असीम है और जो परमेश्वर की आज्ञाओं को गहराई से जानता है वरन् आज्ञा पालन का अनुभव भी रखता है। वह हमें अपना सब कुछ दे देता है।

उसके पास हमारे लिए क्या है? 1. वह हमें पापों की परिपूर्ण क्षमा प्रदान करता है। सदा स्मरण रखें कि परमेश्वर के मानदण्ड सिद्ध हैं, यीशु के मानदण्ड धर्मगुरुओं से कम नहीं थे। सत्य तो यह है कि उसके मानदण्ड उनसे बहुत ऊंचे थे। देखिए मत्ती 5:48, "इसलिए चाहिए कि तुम सिद्ध बनो, जैसा तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है।" यह यीशु के बिना असंभव है। उस दिन जब हम परमेश्वर के समक्ष खड़े होंगे तब हमारे सांसारिक काम व्यर्थ हो जाएंगे क्योंकि वे परमेश्वर के मापदण्ड में खरे नहीं उतरेंगे।

इन पदों से स्पष्ट है कि हम अपने आप में खरे नहीं उतरेंगे। देहधारी परमेश्वर जो हमारे मध्य वास करने आया उसने व्यवस्था को पूरा किया। उसकी परीक्षा ली गई परन्तु वह उसमें गिरा नहीं, संसार ने उस पर बल प्रयोग किया परन्तु वह चूका नहीं। स्वर्ग में जब हम पिता परमेश्वर के समक्ष खड़े होंगे तब वह कहेगा, "यह मेरे साथ है" इस प्रकार आपको यीशु की सिद्धता का लाभ प्राप्त होता है। वह हमारे पापों को पूरा क्षमा कर देता है।

याह की स्तुति करो, कि यीशु हमारे पापों को लेकर क्रूस पर मरा और फिर जी उठा और कहता है, "तुम निर्दोष हो।" इसका परिणाम है, परमेश्वर के साथ हमारी शान्ति। यहां वह "विश्राम" शब्द को दो बार काम

में लेता है जिसका अर्थ है, राहत की सांस लेना या नवजीवन पाना। आप परमेश्वर के प्रेम में नवजीवन पाते हैं। रोमियों 5:1 में पौलुस यही समझाता है, "जब हम विश्वास से धर्मी ठहरे तो अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल रखें।" परमेश्वर के साथ अब हमारी शान्ति बनी हुई है। अब हमें परमेश्वर से कोई अलग नहीं कर सकता है। यीशु ने हमारे पापों को पूरी तरह क्षमा कर दिया है।

यीशु ने हमारे पाप क्षमा कर दिए और हम उसमें विश्वास करते हैं परन्तु हम व्यवस्था का निर्वाह करने में अयोग्य हैं। यीशु इस विषय में क्या करता है? वह व्यवस्था पालन की अपनी परिपूर्ण क्षमता हमें दे देता है जिससे कि हम परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन कर पाएं। यीशु ने कहा, "मुझसे सीखो..." यह "सीखना" शब्द मत्ती अध्याय 28 में "शिष्य" अनुवाद किया गया है जहां यीशु अपने शिष्यों से कहता है कि सब जातियों में "शिष्य" बनाओ। यही हम अब तक सीखते आ रहे हैं। अतः जब यीशु हमसे कहता है कि उसका जूआ उठा लें और उससे सीखें तो उसका अभिप्राय शिष्यता से है। यह एक आश्चर्यजनक सत्य है– उसके शिष्य बन जाने पर आत्मा को शान्ति मिलती है। संसार में न तो कोई शिक्षक था और न है जो शिक्षण की तुलना परिपूर्ण शान्ति से करे। कितने विद्यार्थी हैं जो कहेंगे कि मैं फिर से स्कूल आ गया हूं और अब मेरी आत्मा को शान्ति मिली है?

दूसरा, मेरे चित्त को शान्ति मिलती है। हमें ज्ञानोपार्जन में ऐसा अनुभव नहीं होता है। मैं एक सेमिनरी में प्रचार करने गया तो वहां परिसर में मैंने देखा कि विद्यार्थी इब्रानी भाषा के अध्ययन में व्यस्त थे। उनकी आंखों से प्रकट था कि उन्हें शान्ति नहीं है। वहां राहत किसी में दिखाई नहीं देती थी। यीशु कहता है, मेरा जूआ उठा लो और मुझसे सीखो तो तुम्हें विश्राम अर्थात शान्ति प्राप्त होगी। मसीही विश्वास का सौंदर्य यही है। वह हमें परमेश्वर के आज्ञापालन और परमेश्वर को प्रसन्न करने की अपनी योग्यता प्रदान करता है। हमें उससे क्या सीखना है? हमें उसमें विश्वास रखना सीखना है, अपने में नहीं। हम जूआ उठाने के बाद धीरे धीरे वरन् निश्चित रूप से सीखते हैं कि जो प्रयास हम कर रहे थे वह मसीह को करने दें। इस प्रकार मसीह में विश्राम दिन प्रतिदिन अधिकाधिक गहरी सत्यता बनता जाता है। क्यों? क्योंकि हम मसीही जीवन जीने के प्रयास को त्यागना सीख रहे हैं और साथ में यह भी सीख रहे हैं कि उसे हमारी ओर से परिश्रम करने दें।

यह एक गहरी बात है। इसका अर्थ यह नहीं कि आप कहें, "डेव, क्या आपके कहने का अर्थ यह है कि हम निष्क्रिय बैठ जाएं।" कदापि नहीं । यह आलस्य नहीं है। यह शिक्षा ग्रहण करना है, अनुसरण करना है, व्यवस्था का पालन करना है। आज अनेकों ने व्यवस्था को अनदेखा किया हुआ है। हमें व्यवस्था का त्याग करने की स्वतंत्रता नहीं है परन्तु यह निश्चय ही उसके पालन की स्वतंत्रता है। हम में अन्तर्वासी मसीह हमें योग्य बनाता है कि हम व्यवस्था का निर्वाह करें। आप यह न समझें कि यीशु हमें विधि–विधान, आज्ञाएं

और नियम नहीं दे रहा है कि हमें उन्हें मानना है। यहां मसीही विश्वास की सुन्दरता यह है कि वह कोई धर्म या सदाचार के नियम नहीं वरन् हम में अन्तर्वासी मसीह है जो हमें व्यवस्था का पालन करने में परमेश्वर को प्रसन्न करने में और उसकी आज्ञाओं का पालन करने में योग्य बनाता है। मसीही जीवन में ऐसा कुछ नहीं है जिसे आप करना चाहेंगे। जब मसीह हम में रहकर कार्य करेगा तब परमश्वर का महिमान्वन होगा। सब कुछ मसीह है जो हमें दिन प्रतिदिन अनुग्रह प्रदान करता है। हमारी प्रत्येक प्रार्थना, हमारा प्रत्येक कदम, हमारा प्रत्येक विचार मसीह यीशु से परिपूर्ण होना चाहिए। उसके साथ जूए में जुतने का अर्थ यही है कि वह अधिक से अधिक बोझ उठाता जाए और हमें अधिकाधिक राहत मिलती जाए। क्या आपको इसकी आवश्यकता है? उसका जूआ उठाना यही है।

मार्टिन लूथर ने अति उत्तम कहा, "यहां सब योग्यताएं, तर्क की क्षमताएं तथा तर्कशक्ति या मनुष्य की कल्पना में स्वतंत्र इच्छा सब समाप्त हो जाती है। परमेश्वर की दृष्टि में इनका कोई मूल्य नहीं। मसीह को ही सब करना है और सब कुछ प्रदान करना है।" पद 25 में यही दर्शाया गया है, "तू ने इन बातों को ज्ञानियों और समझदारों से छिपा रखा, और बालकों पर प्रकट किया है।" यही रूपक संपूर्ण नये नियम में काम में लिया गया है। परमेश्वर का अनुभव मूर्खों के लिए है। मन के दीन जन परमेश्वर का अनुभव प्राप्त करते हैं। इसका अर्थ क्या यह है कि बुद्धिमान मनुष्य के लिए यीशु के पास कोई स्थान नहीं? ऐसा नहीं है। इसका अर्थ है कि आपको अहंकार का अन्त करना है। मेरे भाइयों और बहनों हमारा बोझ बहुत भारी है मसीह यीशु हमें उठाता है और जहां चाहता है वहां ले चलता है।

जब हमारा मसीही विश्वास ऐसी यात्रा बन जाता है जिसमें हमारे प्रयास की अपेक्षा मसीह हमें लेकर चलता है। तब क्या होता है? आप मुक्त हो जाते हैं। किसी लेखक ने लिखा, "जब आत्मा पुर्णरूप से निष्क्रिय हो जाती है और मसीह को जो करना है उस पर निर्भर हो उसे निहारती है, तब उसकी उर्जा सर्वोच्च क्षमता प्राप्त करती है और हम अत्यधिक प्रभावी रूप से कार्य करते हैं क्योंकि हम जानते हैं कि वह हममें काम कर रहा है।" जब हम अपने आप कुछ करने की अपेक्षा मसीह को हमारे द्वारा और हमारे लिए काम करने देते हैं तब क्या होता है? मेरे विचार में, तब वह हमें उन स्थानों में ले जाता है जिसकी हमने कल्पना भी नहीं की है। जब हमें परमेश्वर के आज्ञपालन में उसकी क्षमता प्राप्त होती है तब परमेश्वर के साथ हमारी शान्ति हो जाती है। जिसने आपको धार्मिकता में जीवन निर्वाह के लिए बुलाया वह आपके द्वारा धार्मिकता में जी रहा है। जिसने आपको बुलाया कि सब जातियों में सुसमाचार सुनाएं, वह आपके माध्यम से सब जातियों में सुसमाचार सुना रहा है। जिसने आपको बुलाया वह विश्वासयोग्य है और वह करेगा भी। वह हमें परमेश्वर की शान्ति प्रदान करता है।

दूसरी बार विश्राम शब्द काम में लेते हुए वह कहता है, "तुम अपने मन में विश्राम पाओगे।" यह इब्रानी भाषा का "शालोम" शब्द है। यह स्थायी वरन् अनन्त शान्ति है जो मसीह पर भरोसा रखने से और मसीह की संगति से प्राप्त होती है। यह शान्ति तब ही प्राप्त होती है जब हम अपना प्रयास त्याग कर मसीह को काम करने दें। क्या आप को मन की शान्ति चाहिए? यदि हां, तो उस पर अपने पाप डाल दें और परमेश्वर के आज्ञापालन की अपनी अयोग्यता उसे दे दें और वह अपना सब कुछ आपको दे देगा– पापों की क्षमा और परमेश्वर को प्रसन्न करने और उसकी इच्छा पूरी करने की अपनी सामर्थ्य। इस प्रकार हमें मसीह में होना क्या है? उसका अनुभव प्राप्त करना– हम उसके अनुभव की राह पर होंगे।

क्या आप मेरे साथ अपने सिरों को झुकाएंगे? हम अपनी आंखें बन्द करें। यहां कुछ लोग बोझ से दबे और थके–मांदे हैं। आप उससे कहें, "मैं सब प्रयास त्यागता हूं। मुझे तेरा विश्राम चाहिए।" आप में से कुछ के लिए यह कहना पहला अवसर होगा। हम अपनी धार्मिक गतिविधियों को करते रहते हैं और प्रत्येक रविवार आराधना में भी आते हैं परन्तु संकट से सावधान! मैं पूछना चाहता हूं, "क्या आप जानते हैं कि आप मसीह के साथ जूए में हैं?" मैं आपकी आत्मिक गतिविधियों या उपलब्धियों का लेखा नहीं ले रहा हूं क्योंकि ऐसा करना मसीही विश्वास से चूकना है। यदि नहीं तो आप कहें, "मैं उसके साथ जूए के नीचे आना चाहता हूं। आज पहली बार मैं उसे अपने सब पाप और आज्ञापालन की अयोग्यता देना चाहता हूं तथा चाहता हूं कि वह मुझे पूणरूप से बदल दे।" मैं आपको आमंत्रित करता हूं कि उसके जूए तले आ जाओ।

दूसरा, यदि आप उसके जूए तले हैं और धर्मशास्त्र के अनुसार आप वहीं रहना चाहते हैं परन्तु किसी कारण वश आप अपना ही प्रयास करने पर विवश हैं तो मैं आपको यह कहने के लिए आमंत्रित करता हूं, "मैं जूए तले राहत पाना चाहता हूं। शायद बहुत समय बाद, आज मैं उसमें भरोसा रखूंगा।"

हे पिता, मैं प्रार्थना करता हूं कि तू मन को विश्राम दे। मनुष्यों को अपनी ओर आकर्षित कर जिसका प्रतिफल बोझ मुक्ति है। मसीही जीवन जीने के अपने प्रयास का बोझ अब हम पर न हो। हम तुझ पर भरोसा रखें। मैं प्रार्थना करता हूं कि तू हमें अनुग्रह प्रदान कर जिसके द्वारा हम अपने प्रयासों से मुक्ति पाएं और पूरी तरह तुझ में विश्वास करें। आइए हम मन का विश्राम उस में पाएं!